321hi31A

31

घर का सौंदर्यीकरण

किसी भी रिहायशी स्थान को साफ सुथरा और आरामदायक बनाने के अतिरिक्त, इसमें कुछ और चीजों को जोड़ने की आवश्यकता होती है ताकि वह स्थान सुंदर, स्वागत योग्य और आमंत्रण देता हुआ प्रतीत हो। आप किसी होटल में अवश्य गये होंगे और आपने वहाँ पर्दे, सोफे, कालीन, पेंटिंग आदि सभी चीजों को अत्यंत सुंदर व खूबसूरत पाया होगा। दीवारों पर लगी उचित पेंटिंग, फर्श की सजावट, पुष्प सज्जा और अन्य सजावटी वस्तुएं किसी भी स्थान की साज सज्जा को दोगुना कर देती हैं। परंतु इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि बाजार में उपलब्ध सभी सुंदर और कीमती चीजें यदि किसी कमरे में रख दी जायें तो वह कमरा सुंदर दिखने लगेगा। आप कम कीमती समान लेकर भी उन्हें एक कमरे में सुंदर तरीके से व्यवस्थित कर सकते हैं। इसके लिये आपको केवल वस्तुओं का सही चुनाव करने और उन्हें उचित स्थान पर रखने की कला सीखनी है। इस पाठ में आप अपने घर को सजाने के भिन्न–भिन्न तरीकों के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप निम्नलिखित कर सकेंगे :

- घर में वस्तुओं को सुंदर व व्यवस्थित तरीके से रखने के महत्त्व को समझाना ;
- फूलों को कलात्मक ढंग से सजाना ;
- फर्श पर कलात्मक व उपयुक्त सजावट करना;
- घर में सजावटी वस्तुओं को आकर्षक तरीके से व्यवस्थित करना।

31.1 घर के सौंदर्य का महत्त्व

स्वच्छता का अर्थ वस्तुओं को अपने स्थान पर रखना भी है। इसके लिये प्रत्येक घरेलू

वस्तु के लिए एक स्थान निर्धारित किया जाता है। यदि इस प्रकार की व्यवस्था नियमित रूप से न की जाय, तब क्या होता है?

हाँ, आपको चीजें कभी भी समय पर नहीं मिलेंगी; उनको ढूँढने में आपका काफी समय बर्बाद होगा। यदि कभी आप जल्दी में हुये तो आप आधी वस्तुओं को इधर उधर बिखेर देगें, इससे अन्य चीजें भी इधर उधर हो जायेंगी और ज्यादा समय भी बरबाद होगा। यही चक्र फिर चलता रहेगा। आपको हमेशा समय की कमी महसूस होगी और अव्यवस्था भी रहेगी। लेकिन दूसरी ओर यदि सभी वस्तुएं साफ और उचित स्थान पर रखी जायें तब आपको ऐसी कोई परेशानी महसूस नहीं होगी और आप काफी समय और ऊर्जा की बचत कर सकेंगे।

एक ऐसे घर में रहने की कल्पना कीजिए जो फर्नीचर और पेंटिंग से ठुंसा हुआ हो। जिसके पर्दे अन्य चीजों से मेल नहीं खाते, जहाँ शोकेस में कई सजावटी वस्तुएं हैं। जहाँ चलने फिरने के लिये जरा भी स्थान नहीं है। निश्चित रूप से आप ऐसे घर में रहना पसंद नहीं करेंगे।

दूसरी ओर एक ऐसे घर में रहने की कल्पना कीजिये जिसमें फर्नीचर कमरे के आकार के अनुपात में रखा हुआ है। अन्य वस्तुएँ भी करीने से रखी हुई हैं। पर्दे कमरे को एक रूपता देते हैं। रंग एक आरामदायक वातावरण पैदा करते हैं और आंखों को शांति पहुंचाते हैं, प्रकाश व्यवस्था उचित है और ठीक से चलने फिरने के लिये वहाँ समुचित स्थान है। ऐसे घर में रहना आनंददायक है। कुल मिलाकर आपको शांति और आराम की अनुभूति होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि कमरे सुंदर ढ़ग से व्यवस्थित किये गये हैं और हमारी जरूरतों को पूरा करते हैं तब हमें उनसे अधिकतम संतोष प्राप्त होता है। चीजों को आरामदायक और सुंदर लगने के लिए उन्हें एक कलात्मक रूप देना आवश्यक है।

तो आपने देखा कि यदि कलात्मक की और आपका रूझान है तब आप किसी भी स्थान को वांछित और सुन्दरतापूर्ण ढंग से सजा सकते हैं।

31.2 पुष्प सज्जा

क्या आपने कभी विवाह समारोहों और होटलों में पुष्प सज्जा गौर से देखी है? क्या आप को नहीं लगता कि वह अत्यंत सुंदर होती है? आप भी स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से पुष्प सज्जा कर सकते हैं।

चाहे कोई अनौपचारिक या कोई औपचारिक पार्टी हो, ऑफिस, कॉन्फ्रेंस कक्ष या घर का अतिथि कक्ष सभी में भिन्न प्रकार की पुष्प सज्जा की आवश्यकता होती है। इस प्रकार किसी भी पुष्प सज्जा के उद्देश्य और आस पास के वातावरण को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। इसके लिये पुष्प सज्जा के विभिन्न पहलुओं के विषय में जानना जरूरी है।

टिप्पणी

(1) सामग्री को एकत्रित करना

सबसे पहले आप को फूलदान, पिन होल्डर या ओएसिस, ताजे या बनावटी फूल, हरी पत्तियों, सूखी टहनियों आदि सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी।

चित्र 31.1 फूलदान व पिन होल्डर

(i) फूलदान विभिन्न रंगों और सामग्री के बने होते हैं। आप चपटे आकार के बर्तन या लकड़ी के खोखले टुकड़े आदि से भी फूलदान बना सकते हैं। फूल दानों का चुनाव इस प्रकार किया जाना चाहिये ताकि वे आसपास की सजावट और मूड के साथ मेल खा सकें। जिस कमरे में केन का फर्नीचर रखा हो उसमें फूलदान के रूप में चीनी मिट्टी की अपेक्षा एक लकड़ी या बांस की टोकरी अधिक उपयुक्त रहेगी। विपर्यास फूलदान का प्रयोग भी पुष्पसज्जा को सुहावना बना देता है।

(ii) सामान्यतया किसी भी पुष्प सज्जा में विषम संख्या के फूल प्रयोग किये जाते हैं। आप कम से कम 3 फूलों का प्रयोग (जैसा कि जापानी पुष्प सज्जा इकेबाना में किया जाता है) कर सकते हैं। आपको विभिन्न आकार के फूलों का भी चुनाव करना चाहिये।

(iii) आप प्राकृतिक जैसे दिखने वाले बनावटी फूलों का ताजी पत्तियों के साथ प्रयोग कर सकते हैं ताकि आपकी पुष्प सज्जा प्राकृतिक लगे। ताजी पत्तियां सुन्दरता बढ़ाने और पृष्ठभूमि देने के साथ–साथ पुष्प सज्जा को प्राकृतिक दिखने में भी सहायता करती हैं।

(iv) एक भारी, धातु के आधार पर लगी हुयी लोहे की कीलों को पिन होल्डर कहते हैं। इसकी कीलों को जंग रहित, पास पास लगी हुयी और इतनी लम्बी होनी चाहिये ताकि फूलों के तने और पत्तियों को उन पर टिकाया जा सके।

(v) वैकल्पिक रूप से आजकल बाजार में ओएसिस भी उपलब्ध हैं। ये काफी पानी सोख सकते हैं और फूलों की आर्द्रता बनाये रख सकते हैं। इन्हें पानी में तब तक रखना चाहिये जब तक हवा के बुलबुले उठने बंद न हो जायें और पानी इसके मध्य भाग तक पूर्णतया प्रवेश कर जाय। इनको दो से चार बार प्रयोग किया जा सकता है। ओएसिस का प्रयोग, उन नौसिखियों के लिये काफी सरल है जिन्हें पिन होल्डर पर फूलों को सन्तुलित करना मुश्किल लगता है।

(vi) सूखी टहनियां पुष्प सज्जा का प्राकृतिक रूप बढ़ाने और निखारने में सहायता करती हैं। यह टहनियां घुमावदार शाखाओं और जड़ों से एकत्र की जा सकती हैं।

(vii) फूलों के बीच के स्थान को भरने के लिये पत्तियों का प्रयोग किया जाता है। यदि पत्तियां गंदी हैं तो पहले उन्हें धो देना चाहिये। अनचाही, मुरझायी हुयी और पीली पत्तियों की काट–छांट कर लें। फूलों के स्थान पर कुछ हरी–भरी पत्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

(2) पुष्प सज्जा की विधि

पुष्प सज्जा के लिये बहुत ही अधिक कल्पनाशीलता की आवश्यकता होती है। प्रकृति को ध्यानपूर्वक देखने के बाद उसकी नकल करना नौसिखियों के लिये अच्छी शुरूआत हो सकती है। अतिरिक्त सहायता के लिये निम्न जानकारी का अनुसरण करें।

(i) फूलदान में पिन होल्डर लगाकर तब तक पानी डालें जब तक वह पानी से ढक न जाये। विकल्प के रूप में फोम या ओएसिस को तब तक पानी में रखें जब तक वह पानी से पूरी तरह भीग न जाय। इसके बाद उसे फूलदान में रख दें।

(ii) पुष्प सज्जा का आकार निश्चित कर लें। यह तिकोनी, समकोण, अंडाकार या एस के आकार आदि की हो सकती है।

(iii) एक ही रंग के पांच भिन्न आकार वाले फूलों को चुनें। आप एक दूसरे के पूरक रंगों या विपरीत रंगों के फूलों के साथ कुछ नये प्रयोग भी कर सकते हैं।

(iv) फूलों को उनके परिपक्व होने से पहले प्रातः काल ही तोड़े। फूलों की कटाई छंटाई पानी के अंदर ही करनी चाहिये।

(v) फूलों के तने विभिन्न लम्बाई के काटें। सबसे लम्बी टहनी को फूलदान की चौड़ाई से कम से कम डेढ़ गुना लम्बा होना चाहिये।

(vi) सबसे पहले लम्बे फूलों और फिर अन्य फूलों को उनकी लम्बाई के अनुसार सजाइये।

(vii) दूसरी शाखा जो थोड़ी छोटी काटी गयी हो, को पहली वाली शाखा से थोड़ी दूर रखिये।

(viii) फूलों की शाखाएं पिन होल्डर में या ओएसिस में भली भांति लगाएं ताकि यह अपने स्थान पर ठीक से खड़ी रहें और गिरे नहीं।

(ix) फूलों को विभिन्न ऊँचाइयों पर लगाइये। यह सुनिश्चित कर लें कि फूलों के बीच काफी रिक्त स्थान रहें।

(x) फूलों को अपनी ओर को लगायें ताकि आप उनकी सुंदरता का आनंद उठा सकें।

(xi) बड़े फूलों को तले की ओर लगायें, मध्यम आकार के बीच में और कलियों को पुष्प सज्जा में सबसे ऊपर सजायें ताकि उसका ऊपरी भाग अधिक भारी न लगें।

(xii) पिन होल्डर और ओएसिस को पत्तियों/पत्थर से छिपा दें।

(xiii) पुष्प सज्जा को विपरीत पृष्ठभूमि के सामने लगाये, जहां से सारे फूल भली भाँति दिखाई दें।

पाठगत प्रश्न 31.1

(1) आप फूलदान में फूल सजा रहे हैं। निम्न वाक्यों में सुधार करिये –

1. ताजगी बनाये रखने के लिये फूल सायंकाल ही तोड़े जाने चाहिये।
2. फूलों की सम संख्या का चुनाव करना चाहिये।
3. पिन होल्डर में पिनें रखी जाती हैं।
4. सारे फूल एक ही ऊँचाई के होने चाहिये।
5. कलियों को तले की ओर मध्यम आकार के बीच में और सबसे बड़े आकार के फूलों को सज्जा के ऊपरी भाग में लगाया जाना चाहिये।

(2) रिक्त स्थानों को पूर्ति करें –

1. पुष्प सज्जा में, हरी पत्तियां ...., ..., और प्रकृति के .... दिखने में सहायता करती हैं।
2. पुष्प सज्जा में सबसे ऊँची टहनी फूलदान की चौड़ाई से .... लम्बी होनी चाहिये।
3. पुष्प सज्जा को .... रंग की पृष्ठ भूमि में रखा जाना चाहिये।

31.3 पुष्प सज्जा के सिद्धान्त

फूल सजाते समय आपको कुछ आधारभूत सिद्धान्तों का पालन करना चाहिये।

(i) पुष्प सज्जा का आकार कमरे के या कमरे में रखी अन्य वस्तुओं के अनुपात में होना चाहिये, जैसे जिस मेज के ऊपर फूलदान रखा हुआ है। फूल पत्तों को फूलदान के आकार के अनुसार होना चाहिये। आप सीख ही चुके हैं कि छोटे फूलदान में बड़ा फूल खराब लगेगा। पुष्प सामग्री को फूलदान की ऊँचाई से 1½ ऊँचा होना चाहिये।

(ii) पूरी पुष्प सज्जा संतुलित होनी चाहिये। इसका न तो ऊपरी हिस्सा भारी और न ही एकतरफा होना चाहिये।

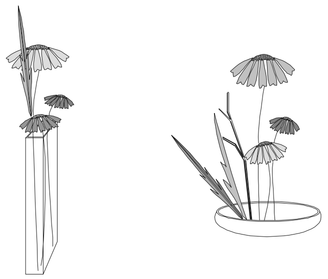

चित्र 31.2 एकतरफा पुष्प सज्जा

(iii) आपकी आँखों को पूरी सज्जा के चारों ओर आसानी से घूमाना चाहिये और एक जगह स्थिर नहीं हो जाना चाहिये। इसके लिये आधारभूत आकार, रंग, टेक्सचर आदि को थोड़ी–थोड़ी दूर पर दोहराया जाना चाहिये। उदाहरण के लिये घुमावदार पुष्प सामग्री का प्रयोग घुमावदार फूलदान में ही किया जाना चाहिये। ऐसा फूलों को भिन्न–भिन्न ऊँचाइयों पर लगाकर भी किया जाता है।

(iv) भिन्न आकार वाले फूलों को क्रमशः पूरे खिले हुये फूल को नीचे की ओर और कलियों को ऊपर की ओर लगायें।

(v) टहनियों को पास–पास लगायें। इससे पुष्प सज्जा प्राकृतिक नजर आयेगी।

चित्र 31.3: पुष्पसज्जा

(vi) पुष्प सामग्री को फूलदान से अधिक महत्त्वपूर्ण लगना चाहिये। फूलों के हर भाग को बराबर ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहिये। बड़े व चमकीले फूल हमेशा आँखों को आकर्षित करते हें। अतः भिन्न रंगों के कई फूल एक ही सज्जा में नहीं लगाये जाने चाहिये। इसकी अपेक्षा कुछ छोटे और हल्के रंगों के फूल चमकीले रंग के फूलों के साथ लगाये जाने चाहिये।

(vii) सूखी टहनियों के आकार को उभारने के लिये या तो फूलों को टहनियों के घुमावों के ऊपर या नीचे लगाया जाना चाहिये। प्रत्येक पुष्प के आसपास कुछ स्थान अवश्य छोड़ें।

(viii) फूल पत्तियों और फूलदानों को समरूप और एक दूसरे के पूरक होना चाहिये।

क्रियाकलाप 31.1

निम्न के लिये पुष्प सज्जा कीजिये –

(1) खाने की मेज

(2) बैठक के लिये

(3) शयन कक्ष के लिये

फूलों को लगाने के बाद अपनी पुष्प सज्जा का मूल्यांकन निम्न प्रश्नों द्वारा कीजिये–

(i) क्या आपकी सज्जा संतुलित लगती है या यह ऊपरी भाग में अधिक भारी लगती है या एक ओर से अधिक भारी दिखाई देती है?

(ii) क्या आपकी पुष्प सज्जा दृढ़ है या ढीली–ढाली रह गई है?

टिप्पणी

(iii) क्या फूलदान और फूल एक दूसरे के साथ मेल खाते या जँचते हैं?

(iv) क्या आपकी पुष्प सज्जा में फूल ठुँसे हुए हैं या फूलों के बीच पर्याप्त रिक्त स्थान है?

(v) क्या आपकी आँखें सज्जा के सभी भागों की ओर बराबर आकर्षित हो रही हैं?

(vi) क्या आपकी दृष्टि सज्जा के एक भाग से दूसरी ओर आसानी से जा रही है?

(vii) क्या आप सभी फूलों को भली–भाँति देख पाते हैं या वे दीवार की तरफ या पीछे के ओर लगे हैं?

पाठगत प्रश्न 31.2

(1) किसी पुष्प सज्जा में निम्न का मूल्यांकन करिये –

1. सभी फूल एक ही ऊँचाई पर लगे हों।
2. बड़े फूल ऊपरी भाग में लगे हों।
3. सभी फूल और पत्तियां बायीं ओर लगाई गयी हों।

31.4 फर्श की सजावट

पुराने समय में लोग फर्श को भिन्न–भिन्न रंगों और फूलों की पंखुड़ियों से आकृतियाँ बनाकर सजाते थे। वे चावल का आटा या मैदा का प्रयोग करते थे। यह परम्परागत सजावट की विधि आज भी प्रचलित है और अल्पना या रंगोली के नाम से जानी जाती है। आपने अपने घरों में भी देखा होगा कि महिलायें जानवरों या अन्य आकारों का चित्रण त्यौहारों पर करती हैं। रंगोली साधारणतया दरवाजे की दहलीज पर, आंगन में या घर के बरामदे में की जाती है। आप भी एक रंगोली के नमूने का डिज़ायन बनाकर खड़िया की सहायता से फर्श पर उसका चित्रण कर सकते हैं। इसकी भराई आप फूलों की पंखुड़ियों से या सूखे रंगों के पाऊडर से कर सकते हैं। इसकी बाहरी रेखाओं को आप मैदा या चावल के पेस्ट से भी बना सकते हैं।

अल्पना/रंगोली बनाते समय आपको कुछ विशेष बातें ध्यान में रखनी चाहिये।

1. त्यौहार या अवसार के अनुसार ही डिज़ायन का चुनाव करें।
2. डिज़ायन की रेखाएं दोहरी खींचें ताकि रेखाओं के बीच में रंगों को भरा जा सके।
3. डिज़ायन के संतुलन और एकरूपता को भी सुनिश्चित करिये।
4. एक दूसरे के आसपास विपरीत रंगों का प्रयोग करें।
5. रंगों की भराई करते समय बाह्य रेखाओं को स्पष्ट करने के लिये स्केल का प्रयोग करें।

6. भराई एक समान करें। भराई की सामग्री को दबाकर एक सार करें।

7. पृष्ठभूमि की भराई करें ताकि डिज़ायन फर्श का ही हिस्सा लगे।

यहाँ कुछ डिज़ायनों का चित्रण किया गया है।

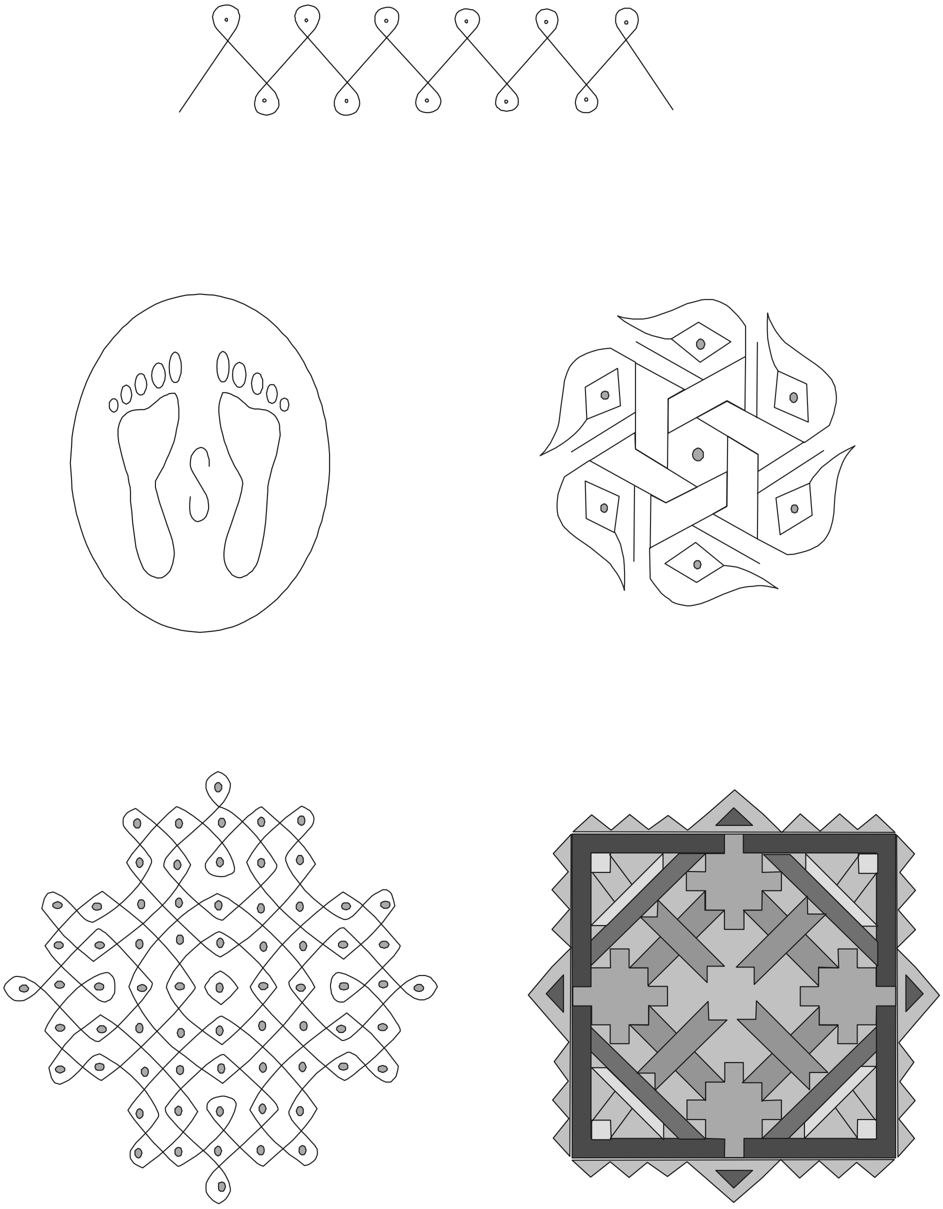

चित्र 31.4 रंगोली के डिज़ायन

टिप्पणी

आप रंगोली के डिजायनों की भराई के लिये बुरादे का प्रयोग कर सकते हैं। बुरादे को रंगने के लिये लगभग 30 ग्राम (दो बड़े चम्मच) रंगने वाले रंग को आधा गिलास पानी में घोलें। बुरादे को छान लें और लकड़ी के टुकड़े हटा दें। बुरादे को प्लास्टिक के टब में रखें। इसमें रंग अच्छी तरह से मिलायें। इसको छाया में अखबार के ऊपर रखकर सुखायें। प्लास्टिक की थैलियों में बुरादे को भरकर रख लें।

क्रियाकलाप 31.2

1. बुरादे को चार भिन्न रंगों में रंग लें।
2. दिवाली, नववर्ष, होली आदि त्यौहारों के लिये रंगोली के अलग–अलग डिज़ायन बनाएं।
3. फर्श पर फूल, बुरादे व घास से रंगोली बनाएं।

पाठगत प्रश्न 31.3

निम्न शब्दों का प्रयोग करके अच्छी रंगोली बनाने के लिये जानकारी दें–

(i) अवसर, (ii) देहरी, (iii) विपर्यास, (iv) एकसम, (v) चपटा

31.4 साजवट का सामान

आपके पास सुंदर पेंटिंग, वॉल हैंगिंग, टेबल लैम्प, कुशन आदि का संग्रह होगा। यद्यपि इनमें से प्रत्येक अत्यंत कलात्मक होगा परंतु यदि उन्हें कलात्मकता से नहीं लगाया गया हो तब आपका घर अव्यवस्थित और बिखरा हुआ प्रतीत होगा। सजावट की सामग्री को लगाते समय आपको निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा।

(i) पेंटिंग को उपलब्ध स्थान और उनके आकार के अनुसार टांगा जाना चाहिये। अर्थात बड़ी पेंटिंग को बड़ी दीवार पर और छोटी पेंटिंग को छोटी दीवारों पर टांगें या फिर छोटी पेंटिंग के एक समूह को साथ भी टांगा जा सकता है। इनको इस प्रकार लगायें कि वे सब एक काल्पनिक वर्ग और आयत के अन्दर आ जायें। पेंटिंग सुन्दरता को उभारने के लिये उनके ऊपर लाइट लगाई जा सकती है जो सीधे पेंटिंग के ऊपर पड़े।

(ii) पेंटिंग सीधी लगाई जानी चाहिये, तिरछी नहीं।

(iii) लैम्प का रंग बाकी की सजावट से मेल खाता हुआ होना चाहिये। इन्हें कोने में रखा जा सकता है या किसी पेंटिंग के ऊपर लटकाया जा सकता है ताकि पेंटिंग की सुन्दरता बढ़ाई जा सके।

(iv) कमरे में कुशन इधर उधर लगाने चाहिये ताकि कमरे में रंग खिल उठें।

टिप्पणी

(v) सावधानी रखें कि कई मूर्तियां एक साथ न रखी जायें।

(vi) एक ही सामग्री से बनी वस्तुएं (जैसे पीतल, कट ग्लास, सफेद धातु, लकड़ी आदि से बनी) एक साथ समूह में रखी जानी चाहिये।

क्रियाकलाप 31.3

अपने घर में निम्न को करिये–

1. अपने बैठक की दीवार पर तीन–चार तस्वीरें टाँगिए।
2. ड्रांइगरूम के शोकस में सजावटी वस्तुओं को लगाइये।

आपने क्या सीखा

(1) यह महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने घर को न केवल साफ सुथरा, बल्कि सुन्दर व व्यवस्थित भी रखें ताकि यह आरामदेह भी लगे।

(2) घर सजाते वक्त फर्नीचर, प्रकाश व्यवस्था तथा अन्य सजावटी सामान के बीच साम्य तथा एकरूपता बनाए रखना अति आवश्यक है।

(3) फूलों को सजाते समय फूलों के प्रकार और रंग की ओर और जिस स्थान पर फूलदान रखा जाना हो, पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिये।

(4) अल्पना और रंगोली फर्श को सजाने की सुंदर और परम्परागत विधियाँ हैं। यह फूलों या चावल या आटे से बने रंगों से बनायी जा सकती है।

(5) तस्वीरों, कुशन व अन्य सजावटी सामान को उनके आकार के अनुसार तथा मनभावन तरीके से सजाना चाहिये।

पाठान्त प्रश्न

1. राहुल के मित्र ने उसके जन्मदिन पर पांच पीले गुलाब भेंट किए। इनको सजाने के लिये उसे किस अन्य सामान की आवश्यकता पड़ेगी? इन्हें उनके शयनकक्ष की साइड टेबल पर सजाने के लिये दिशा निर्देश दीजिये।
2. सजावटी सामग्री को सजाते समय आपको किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?
3. रितिका अपने मित्रों की प्रतीक्षा कर रही है। वह अपने कमरे को सजाना चाहती है। उसको इसके लिये पांच सुझाव दीजिये।
4. पुष्प सज्जा करते समय आप जिन सिद्धान्तों को अपनाएंगें उनके विषय में लिखिये।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1 (1) 1. फूल प्रातःकाल ही तोड़े जाने चाहिये।

2. फूल विषम संख्या में होने चाहिये।

3. पिन होल्डर फूलों की टहनियों को टिकाने/लगाने के लिये प्रयोग किये जाते हैं।

4. फूलों की टहनियों को अलग–अलग लम्बाई की काटना चाहिये।

5. कलियों को सबसे ऊपर, मध्यम आकार के फूलों को बीच में और सबसे बड़े फूलों को पुष्प सज्जा के सबसे निचले भाग में लगाना चाहिये।

(2) 1. सुंदरता बढ़ाते हैं, पृष्ठभूमि देते हैं और प्राकृतिक लगते हैं।

2. 1½

3. विपर्यास

31.2 (1) उसमें कोई लय नहीं रहेगी क्योंकि आंखे एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति न करके एक ही स्थान पर स्थिर रहेगी।

यह असंतुलित लगेगा और ऊपरी हिस्सा भारी लगेगा।

यह असंतुलित और एकतरफा झुका हुआ लगेगा/यह बायीं ओर भारी और दायीं ओर खाली लगेगा।

31.3 (1) 1. इसे त्यौहार के प्रसंग के अनुसार होना चाहिये।

2. डिजायन की रेखाएं दोहरी होनी चाहिये।

3. विपर्यासी रंगों का प्रयोग करें।

4. भराई समान रूप से करें।

5. दबा कर भरें।